मै अब ये तो नहीं कह सकता कि तेरा हर वक़्त साथ निभाउंगा, क्यूंकि …….

मैंने ये कहने का अधिकार तो उसी दिन खो दिया था जिस दिन तूने किसी गैर को अपना मान लिया, यह मुझे बताया था।

हाँ, इतना तो मै अब भी कह सकता हूँ कि तकलीफों में तुम जब भी होगी, अपने और तकलीफों के बीच हमेशा मुझे खड़ा पाओगी।

ये वादा है मेरा।

तुम्हारी सारी दिक्कतें मै खत्म कर दूंगा ये तो नही कह सकता, क्यूंकि वो हक़ तो तुमने किसी और को दे दिया है। मगर, हर समस्या को तुम तक पहुँचने से पहले मुझसे दो-चार होना होगा।

हाँ, ये वादा है मेरा।

तुम्हारी राह मे काँटे आने न दूँ ये तो मेरी औकात नही, पर उन कांटों पर तुम्हारा पैर पड़े उससे पहले अपनी हथेली बिछा दूंगा।

ये वादा है मेरा।

मै चाँद-तारे तोड़ तेरे दामन में सजा दूंगा, सच है यह मेरे बस में नहीं, और अब मेरा तुमसे ये कहना भी ठीक नहीं! मगर हाँ, प्यार के उन नर्मोनाज़ुक रंगीन लम्हों में जो कसमे खाई थी मैंने, उनके निबाह में मेरी तरफ से कभी कोई कमी नहीं आएगी।

ये वादा है मेरा।

साथ बिताये वक्त में हो सकता है बहुत ख़ुशी ना दी हो मैंने, पर तुम्हारी खुशी के लिए मेरी कोशिशों में कभी कोई कमी का अनुभव नहीं किया होगा तुमने।

ऐसी उम्मीद है मुझे।

हाँ, मानता हूँ कि दिल का थोड़ा अक्खड़ हूँ, थोड़ी कड़वी और कई बार झुंझलाहट के साथ बातें जरूर की होंगी मैंने, पर उसके लिए तो मै माफ़ी का हक़दार समझता हूँ खुदको, और उम्मीद है माफ़ कर भी दिया होगा तुमने।

कितने पुरसुकून थे वो साल जो साथ-साथ बीता दिए हमने, पर इस बात की टीस हमेशा रहेगी दिल मे कि हम एक नहीं हो पाए, जानता हूं कोशिश तूने भी भरपूर की होगी, शायद विधि को मंजूर ही नहीं था मिलना हमारा!

अच्छा सुनो, मैंने जो चिट्ठियां लिखीं थी न तुम्हे, मगर जाने क्यों भेज नहीं पाया, वही जो मुसलसल तुम मांगती रही मुझसे, उन्ही को जोड़कर एक किताब की शक्ल में ढाला है मैंने। उसे समर्पित भी किया है तुमको ही, कभी समय मिले तो पढ़ना जरूर!!

वो तुम्हे मेरी याद तो दिलाएगी, पर जब दुखी होगी न तुम तो हंसाएगी भी बहुत, और जानती हो ना, तुम्हारा हँसता हुआ चेहरा मुझे उतनी ही संतुष्टि देगा जितनी उन दिनों दिया करता था जब तुम्हारी मुस्कुराहट

मेरा सरमाया हुआ करती थी।

जब हम साथ थे न, तो बहुत सी बातें मैं कह नहीं पाता था। हालाँकि तुम तो कहती बहुत कुछ थी कहने के लिए, पर मेरे स्वाभाव के मुताबिक मैने उन बातों को दिल के तहखाने में कहीं दफन कर दिया था। अनकही सी, वो सब बातें भी तुम्हे इस किताब में मिल जाएँगी!

मै कुछ बताना चाहता हूं तुम्हे…... और साथ ही धन्यवाद भी करना चाहता हूं तुम्हारा, उस सबके लिए जो तुमने मुझे दिया उन साथ-साथ बिताये वर्षों मे।

जो मेरे लिए अब भी बहुत उपयोगी साबित हो रहा है एक सफल वैवाहिक जीवन जीने में, उस सबके लिए तुम्हारा आभार!

कैसे तुमसे जुड़ाव ने मेरी जिंदगी को सकारात्मकता से भर दिया??

कैसे हर चौराहे पर प्यार करने वाले को तुमसे हो जाने के बाद फिर किसी से हुआ ही नही?

कैसे किसी के समक्ष कमजोर तक न दिखने वाला तुम्हारे सामने फूट-फूटकर रोना सीख गया?

कैसे कभी किसी की चिंता न करनेवाले ने तुम्हारी परवाह को ही अपना जीवन बना लिया?

कैसे इन थोड़े से वर्षों ने मुझे तेरा हमेशा ख्याल रखने की खातिर खुद की सबसे ज्यादा चिंता करना सिखा दिया?

हां, ये भी है कई बार बहुत तकलीफ भी दी होगी मैने, पर सच मानो ऐसा जान-बूझकर कभी नही किया, हां, यह जरूर है उसके लिए माफी नही माँगी मैने।

पर निश्छल अल्हड़ भावनाओं का होना ही बिन मांगे क्षमा का हकदार तो बना ही देता है मुझे।

और हाँ, मैं तो अब साथ नहीं रहूंगा आइंदा सफर में, पर अपना बहुत ख्याल रखना तुम, ठीक वैसे ही जैसे कई बार मेरे बीमार हो जाने पर मेरा रखती थी।

इस बात का ख्याल किये बिना की बॉयज हॉस्टल में लड़कियों के आने पर पाबन्दी है, तुम मेरे कमरे तक पहुंच जाती थी।

एक बात और, बात बात पर जैसे पहले रो देती थी, अब रोना मत, ये याद रखना कि मै नहीं हूँ अब वहां, जो चुप करा दूंगा तुमको।

तेरे लिए दिल मे कुछ भी नही मोहब्बत के सिवा!

चाहो गर तुम मेरी हर धड़कन की तलाशी ले लो!!

अच्छा कितने साल हो गए न हमे अलग हो के

याद है तुझे ....नहीं न.....

हम तब अलग हुए थे जब सोशल मीडिया नहीं था,

फोन भी तो नहीं थे हमारे पास,

अब जबसे ये सोशल मीडिया आया है न,

तब से ढूंढ रहा मै तुझे!

क्या तू भी ढूंढती है मुझे या नहीं......... पता नहीं!!!

तेरा आखिरी शहर जो याद है मुझे तेरे नाम के साथ,

मै कम से कम एक बार ढूंढता हूँ जरूर रोज,

हाँ सच में रोज एक बार....

पर शायद तूने शहर बदल लिया होगा?

अब तो नाम बदलकर प्रोफाइल बनाने का रिवाज सा हो गया है,

तो शायद बदल ही लिया होगा तूने भी,

उपनाम भी शादी के बाद बदल ही गया होगा,

क्यों होता है ऐसे?

पर मेरा तो शहर बदलने पर भी,

मैंने उसी शहर का नाम लिखा है,

ढूंढने में तकलीफ न हो तुझे,

पर तू ढूंढती ही नहीं है शायद!

इस विशाल संसार में कैसे ढूंढू तुझे समझ से परे है मेरे,

सोते हुए आँख खुल जाती है याद कर तुझे,

फिर पूरी रात आँखों-आँखों में कट जाती है,

मन नहीं लगता बेचैनी सी महसूस करता हूँ मै हरपल,

थक जाता हूँ ढूंढते ढूंढते तुझे मै रोज,

पर मुकाम नहीं मिलता,

अच्छा पता है मै अंदाजा भी लगता हूँ,

चेहरा कैसा होगा तेरा, थोड़ी मोटी हो गई होगी शायद,

साडी पहनती होगी, पहनती हो की नहीं बताना,

थोड़ी लम्बी भी होगी हाँ पर मुझसे थोड़ी छोटी! सच है न!

क्या करूँ बताओ न कभी कैसे ढूंढू तुम्हे?

इतने सालों में तेरे नाम की,

करीब करीब हर लड़की को सन्देश भेज दिया है मैंने,

जबाब भी तमाम आये पर तेरा नहीं आया,

जिस दिन तुम मिल गई न सोचता हूँ कितनी बार देखूंगा मै तुम्हे,

अगर तुम भी ढूंढती हो और मिल जाता हूँ मै तुमको तो,

जबाब देना मुझे बिना इसका फिक्र किये,

की मै तुम्हारे आज में खलल डालूंगा!

सिर्फ चुपके-चुपके से प्रोफाइल देखूंगा तुम्हारा

देखूंगा बस!

कहोगी तो कभी बात भी नहीं करूँगा मै सच में,

हाँ सच में विश्वास करो मुझपे,

नहीं कभी बिलकुल नहीं,

सच बेचैनी बहुत है,

सुकून मिल जाये जबाब से तेरे, जहन को मेरे शायद!!!

अच्छा सुनो एक बात बताओ,

अरसे बाद फिर से ये क्या हो रहा है मुझे?

तुमसे तो कम कर दिया था मैंने

पर तेरी यादों से ये क्यों हो रहा है मुझे?

बड़ी मुश्किलों से खुद को संभाला था मैंने,

अब तुम्हारे एहसासो से इश्क़ क्यों हो रहा है मुझे ?

अरसे बाद फिर से ये क्या हो रहा है मुझे?

सुनो ना बोलो उन्हें, समझाओ उनको

न याद करें और न आएं

तुम्हे तो पता हैं न,

फिर हुआ तो बच नहीं पाउँगा मै

सच बिन तेरे इस बार मर जाऊंगा मै

ख्याल तेरा क्यों नहीं जीने दे रहा है मुझे?

अरसे बाद फिर से ये क्या हो रहा है मुझे?

पता है जब से तू गई है न सच सोया नहीं हूँ मै रातों को,

था मुश्किल बहुत पर लगा था भुलाने में मै बातों को

तेरे ख्यालातों को, जज्बातों को, एह्सासातों को,

उनका फिर लौट आना तकलीफ क्यों दे रहा है मुझे!

अरसे बाद फिर से ये क्या हो रहा है मुझे?

इतने सालों से जिंदगी जीया ही कहा है मैंने

बड़े जतन से खुद में खुद का पता किया है मैंने

झेल लिया है अब तक मैंने सीने पर आघात सारे,

काटा हैं मैंने सोकर काटों पर वो रात सारे,

जीना तो दूर ये तो मरने भी नहीं दे रहा है मुझे?

अरसे बाद फिर से ये क्या हो रहा है मुझे?

अरसे बाद फिर से ये क्या हो रहा है मुझे?

अजनबी तो नही थे हम,फिर पहचानी क्यूं नही लगी,

मिला तो कल मै तुमसे ही था,पर पहले जैसी नही लगी।

और दिखीं थीं माथे पर, बेज़ान लकीरें चिंता वाली,

कहो ना कैसे आईं वो, पहले तो कभी वो दिखीं नही,

रंग भी तेरा फीका सा था, चमक पुरानी नही लगी,

अजनबी तो नही थे हम,फिर पहचानी क्यूं नही लगी,

आँखों से बहने को तत्पर,आंसू की एक धार भी थी!

और फट पड़ने को मुंह से तेरे, बातें धुंआधार भी थी,

समझ नही मै पाया कैसे, और लौट मै आया कैसे?

क्या हुआ है कुछ तो कहो न मै भला समझूंगा कैसे?

है पता तुझे कि आंसू तेरे, मुझे अब भी खूब रुलाते हैं,

होंठ जिसे मैं कँवल था कहता,उनमे सुर्खी आई कैसे?

कहाँ गई मुस्कान तुम्हारी?और गालों मे ये झांईं कैसे?

मुँह से जो बिखराती थी आंखे नचा नचाकर तू,

मीठी थी पर हलक में तेरे बात मुझे क्यों दबी लगी?

अजनबी तो नही थे हम,फिर पहचानी क्यूं नही लगी,

लम्बे बाल पसंद मुझे थे,फिर काट उन्हें क्यों तूने डाला,

विरोध भला ये मेरा था?

या छोटे बाल पसंद जिसे है उससे तेरा पड़ा है पाला?

गैरों की शर्तों पर तूने कब से जीना सीख लिया?

आत्मसमर्पण तेरी जाने,क्यों मुझे वो अच्छी नही लगी।

अजनबी तो नही थे हम,फिर पहचानी क्यूं नही लगी,

पलकें ऐसे झुकती ना थी,खुद को रानी झाँसी कहती थी,

चुप भी ऐसे रहती ना थी, ना बात किसी की सहती थी

बोल नहीं क्यों देती मुझसे दिल थोड़ा तो हल्का होगा,

गैर मुझे क्यों समझ लिया है, तेरा ही तो हूँ मैं अब भी,

चालें तो तेरी उलझी ना थीं,पर भावें सुलझी नहीं लगी।

अजनबी तो नही थे हम,फिर पहचानी क्यूं नही लगी,

अब भी नाम हथेली पर क्या, लिखती और मिटाती होगी?

जाने क्यों लगता है अब भी? उसे,मेरी याद सताती होगी!

मेरी गलियों में जाकर उसको, जाने कैसा लगता होगा?

घर को मेरे देख पुराने, वो बच्चों को गले लगाती होगी!!

                         अब भी नाम हथेली पर क्या........

याद उसे क्या होगा अब भी नजर जो मुझसे मिल जाती थी?

आंख चुराकर मुझसे फिर, वो धीरे-धीरे मुस्काती थी!

मुझे देखने के ही ख़ातिर,वो छत पर आया करती थी,

फिर सखियों से छेड़े जाने पर,निश्चित ही इठलाती होगी!!

                      अब भी नाम हथेली पर क्या..........

मेरा भी उसके घर तब ही जाना होता था,

होली या दिवाली हो त्योहार बहाना होता था,

उसके हाथों मे मेंहदी से नाम गुदा जो होता था।

मुझे दिखाकर नाम मेरा फिर,वो भी तो शरमाती होगी।

                      अब भी नाम हथेली पर क्या...........

सांसो से होकर उसको धड़कन तक जाना होता था,

मिलकर दिल से,आंखो से फिर वापस आना होता था!

जाते उसको देख मेरा दिल भी तो भर आता था,

मुझको रोता देख वो फिर,खुद भी तो मर जाती होगी।

                       अब भी नाम हथेली पर क्या...........

अभी ख़त्म सफर ये हुआ नही है,

तय करना अब भी बाकी है,

सीख लिया हमने सब पर,

इम्तिहान तो अब भी बाकी है!

अभी ख़त्म सफर ये हुआ नही है,

तय करना अब भी बाकी है!!

हो संभव गर तो लौट ही आना

और ना हो! तो फिर रुक जाना,

जो प्यार का मेरे कर्ज है तुझ पर

वो कर्ज चुकाना बाकी है!

अभी ख़त्म सफर ये हुआ नही है,

तय करना अब भी बाकी है!!

निकाल दिया था हमको दिल से,

तो बाहर ही हमको रहने देते,

सपने में था साथ मै तेरे,

तो ख्वाब हमारा पलने देते,

वैसे तो निकाल दिया है दिल से,

पर थोड़ा सा हटाना बाकी है,

अभी ख़त्म सफर ये हुआ नही है!

तय करना अब भी बाकी है!!

लिखा था तूने पत्र मुझे जो,

वो खत भी जलाना बाकी है,

और अंतिम बार बुलाया था जो,

पर मै ना मिलने आया था,

वो बची हुई मुलाकात हमारी,

वो मिलना अब भी बाकी है!

अभी ख़त्म सफर ये हुआ नही है,

तय करना अब भी बाकी है!!

कुछ सपने अब भी कोरे से हैं,

कुछ लिखे थे हर्फ़ अधूरे से हैं,

सपने तो सारे टूट गए पर,

हर्फों को समझना बाकी है,

है अफवाहों मे रिश्ता अब भी,

पर उन चर्चों पर लगाम लगाना बाकी हैं!

अभी ख़त्म सफर ये हुआ नही है,

तय करना अब भी बाकी है!!

इतनी थी बेचैनी क्यों कल रात मुझे?

साध रहा था समय को क्यों,वो सरपट जबकि भाग रहा था?

रात में जल्दी सोने वाला, क्यों रात देर तक जाग रहा था?

तूझको भी महसूस हुआ या एहसास अकेला मेरा था,

हाँ याद तुझे भी आई होगी, गा,गाना मीठा काग रहा था!!

साध रहा था समय को क्यों,वो सरपट जबकि भाग रहा था?

कितनी रातें जाग के काटा, कैसे ये बतलाऊँ तुझको,

ना मेरी है,ना मिल पाउँगा, कैसे ये समझाऊँ खुदको !

है ज्ञात मुझे तू रोती होगी,न रातों को तू भी सोती होगी?

था हक़ नहीं क्या मेरा तुझ पर? क्या खुदा से यूँ ही मांग रहा था?

साध रहा था समय को क्यों,वो सरपट जबकि भाग रहा था?

कैसे तूने संग गैर के जन्मो की थी कसम वो खाई,

बाबूजी की लाज रखी या माँ ने थी सौगंध खिलाई!

भइया ने समझाया था या इसके बिच में थी भौजाई,

तू भी बिलख रही थी शायद,उस रात को मै भी जाग रहा था!

साध रहा था समय को क्यों,वो सरपट जबकि भाग रहा था?

रोना रातों को तेरा, मुझे अब भी यहाँ जगाता है,

याद तुम्हारा जाने क्यों हाँ दिल को बहुत दुखाता है!

पता है तुमको,दोस्त भी सारे,मुझे ही दोषी कहते हैं,

कारण कुछ भी रहा हो पर मै, धो दामन का दाग रहा था!

साध रहा था समय को क्यों,वो सरपट जबकि भाग रहा था?

औरत अगर परिंदा बनती,

               विश्वास मुझे है मोर वो होती,

जानवर भी गर बन जाती तो,

               हिरनी का ही रूप वो लेती!

और पतंगा बनती तो फिर

              निश्चित है तितली हो जाती,

बोझ सभी का ढ़ोनेवाली,

               सबको ममता देने वाली,

निर्जीव अगर भी हो जाती तो,

               पक्का है धरती बन जाती!!

किसी ने पा लिया यूँ ही तुझे,

हम हाथ क्यों मलते रहे?

तू ही नहीं फिर क्या मिला?

सब तू ही तो थी मेरे लिए,

चाह बस तेरी नहीं थी,

था ख्वाब भी तो ये मेरा!

न मिले कुछ भी भले पर,

साथ हम चलते रहें,

किसी ने पा लिया यूँ ही तुझे,

हम हाथ क्यों मलते रहे?

कहती तो थी तू भी मुझे,

सांसें भी तेरी, हैं चल रही मेरे लिए,

और जाने क्यों धड़क रही हैं?

धड़कने अब भी मेरी, तेरे लिए,

गर लड़ना था तो लड़ भी जाता,

ज़माने से भीड़ भी मै जाता,

रोका था तूने ही मुझको

हम भी न जाने बात क्यों सुनते रहे?

किसी ने पा लिया यूँ ही तुझे,

हम हाथ क्यों मलते रहे?

या तो अपना पता दे मुझको,

या मेरे घर पे तू आ,

पहुंचा हूँ अब राह जिस,

या तो उस रस्ते पे आ,

जब छोड़ना था मुझे अकेला,

फिर साथ क्यों चलते रहे?

किसी ने पा लिया यूँ ही तुझे,

हम हाथ क्यों मलते रहे?

वादा भला मुझसे किया क्यों?

तय मिलना जब उससे ही था,

उस दिन न जाने क्या हुआ,

पर राह हम तकते रहे?

और हुए हम आईने से रूबरू खुद के लिए,

पर भला तुम क्यों नजर आते रहे?

किसी ने पा लिया यूँ ही तुझे,

हम हाथ क्यों मलते रहे?

किसी ने पा लिया यूँ ही तुझे,

हम हाथ क्यों मलते रहे?

कैसे जा के दूर तू मुझसे वापस आना भूल गई?

एक बात बता तू घर का मेरे रस्ता कैसे भूल गई,

मेरी बाँहों में ही तुझको नींद हमेशा आती थी,

और मेरे ही दिल को तू, अपना पता बताती थी,

देखे तुझको लगता है अरसों हो जैसे बीत गए,

बात भी करके तुमसे अब लगता है वर्षो बीत गए,

और न जाने कैसे तू आशियाना अपना भूल गई?

कैसे जा के दूर तू मुझसे वापस आना भूल गई है?

कुछ साथ गुजारी थी शामे जो,

क्या याद मेरा वो शाम नहीं दिलवाता है?

वो चाय की टपरी वाला जाने,

क्यों मुझे ही अक्सर मिल जाता है?

मुझसे पहले हाल तेरा,वो सदा ही पूछा करता है,

क्या बोलूं मै उससे बोलो?

दिल वहां भी जाने से डरता है,

जब भी कॉलेज जाता हूँ मै हॉस्टल वाला,

काका मुझको दे आवाज बुलाता है,

बातें करके वो भी जाने क्यों तेरी ही याद दिलाता है?

सपनो में तेरे क्या,तस्वीर मेरा भी आता है?

मेरे खातिर दिल तेरा क्या अब भी सोर मचाता है?

फिर क्यों मुझको छोड़ गई तू,चली क्यों ऐसे दूर गई?

कैसे जा के दूर तू मुझसे वापस आना भूल गई?

जब तुझे सताता था मै पहले,कहती थी ये हक़ है तेरा,

अधिकार मेरा, फिर छीन लिया क्यों नाहक मेरा,

लड़ते तो हम पहले भी थे पर कभी न इतना तूल दिया,

याद नहीं अब करती मुझको सच में ही तू भूल गई?

कैसे जा के दूर तू मुझसे वापस आना भूल गई?

थोड़े बहुत सवाल हैं मेरे,

जबाब की चाहत कहां करूँ,

बिन तेरे अब ख्वाब कहाँ हैं,

गिला मै नींद की कहां करूँ?

यादों की कवायद कहां करूँ?

तेरी मै शिकायत कहां करूं?

करता तो मै शिकवा तुमसे ही,

पर जाने कहां तुम चली गई,

साथ मेरे तो फूल सी थी, तुम बन फिर कैसे शूल गई?

कैसे जा के दूर तू मुझसे, वापस आना भूल गई?

कौन कहता है मै खाली हाथ जाऊँगा?

जाते हुए यादों के तेरे साथ जाऊँगा!

कुछ अनकही सी रह गई हैं बाते जो....

वो बातें भी तो लेके सारी साथ जाऊँगा!!

कौन कहता है मै खाली हाथ जाऊँगा?

करते रहे हंसखेलियाँ जो साथ- साथ हम,

वो भी तो होंगी पास मेरे फिर भला क्या ग़म!

और लिखी वो चिट्ठियां,तुझको कभी जो भेज ना पाया,

जला दिया था उनको पर,राख तो मै ले ही जाऊंगा!!

कौन कहता है मै खाली हाथ जाऊँगा?

बिन तेरे मुश्किल है जीना,पर वो भी मै करके दिखाऊंगा,

जाने क्यों लगता नहीं है, बिन तेरे मै मर भी पाउँगा?

गर मौत ने आवाज दे दी, फिर मुझे जाना ही पड़ेगा,

पर गठरी तेरे वादों की मै लेके अपने साथ जाऊंगा!

कौन कहता है मै खाली हाथ जाऊँगा?

हाँ दूर हो जाऊंगा तुझसे फिर भी तेरे ही साथ रहूँगा,

होके जुदा तुझसे न जाने,कब तलक जिन्दा मै उसके बाद रहूँगा!

ये बात मेरी मान ले, और गाँठ भी तू बांध ले,

चेहरे की तेरे ताज़गी,मुस्कान तो मै ले ही जाऊंगा!!

कौन कहता है मै खाली हाथ जाऊँगा?

क्या जानो कैसी लगती हो?

दिखती हो दर्पण में जैसी,

कहाँ भला तुम वैसी लगती हो?

असल तुम्हारा अलग है उससे

थोड़ा मिलती-जुलती लगती हो

दर्पण तुमको देख कहाँ पाता है?

जैसा तुम मुझको दिखती हो?

क्या जानो कैसी लगती हो?

दिखती हो दर्पण में जैसी,

कहाँ भला वैसी लगती हो?

गर कभी मिलना हो खुद से,

तो मिलना मुझको फुरसत से!

बैठ के तुमको समझायेंगे,

कैसी लगती हो तबियत से!!

आँखों में मेरे, तुम ही होगी,

और दोनों में खुद से मिलोगी!

तब तुमको आभास ये होगा,

मुझमे सपनों सी पलती हो,

क्या जानो कैसी लगती हो?

दिखती हो दर्पण में जैसी,

कहाँ भला वैसी लगती हो?

नदियों की धारा सी निश्छल,

मन है गंगाजल सा निर्मल,

दर्पण देखता है उपर से,

मुझे तो अंदर से दिखती हो,

पर रहना मेरे पास ही होगा,

तब तुमको एहसास ये होगा,

मेरी नही तुम हो सकती पर,

जाने क्यों अपनी लगती हो!

क्या जानो कैसी लगती हो?

दिखती हो दर्पण में जैसी,

कहाँ भला वैसी लगती हो?

क्यों मन में पीड़ा पाल रखा है?

किस भार ने तुझको साल रखा है?

आ सबको आसान मै कर दूँ,

ना मेरी है ना मै तेरा,

इसका भी एलान मै कर दूँ!

आ सबको आसान मै कर दूँ!!

कभी कभी जो आ जाती है?

तुझको भी शायद याद मेरी,

तंग तुझे भी करती होगी,

खुदा से वो फ़रियाद मेरी?

तेरी रगों से ले के खुश्बू,वापस,

जुदा तेरी पहचान मै कर दूँ ,

तुझको अब अनजान मै कर दूँ!

आ सबको आसान मै कर दूँ!!

जो कुछ भी है बिच हमारे,

मार उन्हें मै खुद देता हूँ,

तकलीफ तेरी ना बढ़ जाये अब,

ये भी तेरा काम मै कर दूँ!

आ सबको आसान मै कर दूँ!!

बिछड़ के तुझसे मर जाऊंगा,

भला ऐसा भी नादान नहीं हूँ,

पतझड़ में एक बिखर जाऊँ,

मै ऐसा भी बागान नहीं हूँ,

मेरी तेरी एक थी दुनिया,

अब तेरा अलग जहान मै कर दूँ!

आ सबको आसान मै कर दूँ!!

खो गया हूँ तुममे ही मै,

क्या ढूंढ मुझे तुम ले आओगी?

बिखर गया जाने से तेरे,

समेट मुझे क्या फिर पाओगी?

माना कठिन बडा है पर,

तेरी ही जिम्मेदारी है!

उलझ गया हूँ याद से तेरी,

क्या फिर से झगड़ा सुलझाओगी?

खो गया हूँ तुममे ही मै,

क्या ढूंढ मुझे तुम ले आओगी?

क्या याद तुझे आता है अब भी?

कसम जो हमने खाई थी,

मर जायेंगे जुदा न होंगे,

साथ जियेंगे साथ मरेंगे,

पर हाथ कभी न छोड़ेंगे,

हम साथ कभी न छोड़ेंगे,

पकड़ जो हाथों की ढीली थी,

क्या उसको कसने फिर आओगी?

खो गया हूँ तुममे ही मै,

क्या ढूंढ मुझे तुम ले आओगी?

शाम को तेरी याद आती है,

सुबहें मुझको तड़पाती हैं,

दीदार के तेरे खातिर जाने,

क्यों आँखें मेरी भर आती हैं?

मेरे कुछ भी कहने पर तू ,

झगड़ मुझी से पड़ती थी,

और दर्द में होने पर तू ,

मुझसे पहले रो पड़ती थी,

हसीन वो लम्हें अब भी होंगे,

उन्हें साथ बिताने फिर आओगी?

खो गया हूँ तुममे ही मै,

क्या ढूंढ मुझे तुम ले आओगी?

जो गीत मिलन के गाये थे,

गाने उनको साथ मेरे फिर आओगी?

या छूट गया है साथ जो अपना,

वो साथ निभाने फिर आओगी ?

खो गया हूँ तुममे ही मै,

क्या ढूंढ मुझे तुम ले आओगी?

बिखर गया जाने से तेरे,

समेट मुझे क्या फिर पाओगी?

खो गया हूँ तुममे ही मै,

क्या ढूंढ मुझे तुम ले आओगी?

चलते राह न जाने किसने, नाम लिया था तेरे शहर का!

चल पड़ा जमाना फिर से,पर वहीँ पे मै तो ठहर गया था

याद आया वो किस्सा सारा शामो- सहर का!!

चलते राह न जाने किसने, नाम लिया था तेरे शहर का!!

चल पड़ा था जाने दिल में फिर से किस्सा वही पुराना,

स्कूल, वो कॉलेज और हंसी सा वही जमाना!

आंख मे मेरे बसी हो जैसे तस्वीर कोई हाँ तेरा पुराना,

जो बातें की थी नदी किनारे वो भी आईं और शजर का!!

चलते राह न जाने किसने, नाम लिया था तेरे शहर का!!

गर्मी थी पर जाने क्यों हो गया था मौसम बड़ा सुहाना,

दिल ढूंढ रहा हो मिलने का तुझसे जैसे कोई नया बहाना!

भूल गया था सब कुछ देखो पर चेहरा तेरा भूल न पाया,

जाने से तेरे दर्द उठा था भुला नही वो कसक कहर का!!

चलते राह न जाने किसने, नाम लिया था तेरे शहर का!!

बेचैनी तो खूब थी दिल में,पर धड़कन में एहसास तेरा था,

रोक नहीं मै पाया साँसे वहाँ भी तो बस आभास तेरा था!

रहा भले मै थोड़ा सा था, पर रहा तो मै भी खास तेरा था,

पर मचल गया इस बार तो नाम ही सुन के तेरे शहर का,

चलते राह न जाने किसने, नाम लिया था तेरे शहर का!!

चली गयी और कुछ ना बोली,

कुछ तो बात रही होगी!

बिन मेरे पल जो एक नहीं रह पाती थी,

दशकों से बात नहीं की मुझसे,

पूछा दिल का हाल नहीं मुझसे!

दिल को जो मंजूर नहीं था,

कैसे वो साजन के साथ रही होगी!!

चली गयी और कुछ ना बोली,

कुछ तो बात रही होगी!

दिल को जो था दर्द उसे,

भला वो कैसे सहती होगी!

आदत तो उसको मेरी थी फिर,

उन्हें वो कैसे गहती होगी!

भला वो कैसे सोती होगी,

या रात वो पूरी रोती होगी!

सपनों में तो मै था उसके,

बिन मेरे कैसे रहती होगी

पता उसे जब चला ये होगा!

बिन मेरे उसको रहना होगा!

हाँ करना मुश्किल था उसका,

इसमें भी कोई घात रही होगी!!

चली गयी और कुछ ना बोली,

कुछ तो बात रही होगी!

उसकी गलियों में जाना,

क्या याद नहीं अब आता होगा!

और इशारे करना मेरा,

क्या नहीं उसे तड़पाता होगा!

धड़कन में उसके मै रहता था,

बिन मेरे जाने सांस भी कैसे,

उसे भला अब आता होगा?

दिन तो फिर भी कट जाता है,

मुश्किल से रातें काट रही होगी!

चली गयी और कुछ ना बोली,

कुछ तो बात रही होगी!!

पहले जब जाया करती थी,

मुड़ मुड़ के देखा करती थी!

अंतिम बार न जाने क्या था,मन में उसके,

चली गयी और मुड़े बिना ही चली गई,

गलती तो मेरी थी सारी,

फिर वो जाने क्यों छली गई!

दोष कहाँ था उसका कोई,

पर काट वो कैसे पेचीदे हालत रही होगी!

चली गयी और कुछ ना बोली,

कुछ तो बात रही होगी!!

चोट तो दिल पर करती थी मरहम भी वही लगाती थी

नाम मेरा तो दिल में था, कह नीली शर्ट बुलाती थी।

जाने क्या था उसमे ऐसा उसको ही देखा करता था,

उसकी जान तो मुझमे थी, वो मेरी जान कहाती थी।।

                       चोट तो दिल पर करती थी.....

मिलती थी वो जब भी मुझसे निपट अकेले होती थी,

देख के मुझको जाने क्यों,वो लिपट के मुझसे रोती थी।

उसके रोने पर जाने क्यों मर जाने का मन करता था,

मेरे घावों पर भी वो कुछ ऐसे नमक लगाती थी।।

                          चोट तो दिल पर करती थी.....

कॉलेज का वो अंतिम दिन था,दिन वो भारी बेहद था,

एक टक वो देख रही थी, अंतिम बार ही शायद था।

आँखों ने आँखों से मिलकर जाने क्या क्या कसमे खायीं,

बात तो उसने किया नहीं और करने पे झल्लाती थी।।

                          चोट तो दिल पर करती थी.....

कुछ तो ऐसी बात थी उसमे ख्वाब में भी गर मिल जाती थी,

दिन तो फिर भी दिन होता है रात उजाला कर जाती थी।

इश्क़ में कितनी गहराई है उसकी आँखों में दिखता था,

प्यार में मुझको मरना आया पर जीना वही सिखाती थी।।

                            चोट तो दिल पर करती थी.....

छोड़ मेरी कमियों को सारी,

तू तो मेरी खूबी रख,

मै रखता हूँ दोष तेरे सब,

तू प्यार मेरा बखूबी रख,

दर्द मुझे तू दे दे अपने,

मुस्कान मेरी सब तू ही रख!

छोड़ मेरी कमियों को सारी,

तू तो मेरी खूबी रख!!

तू, मेरी हाँ नींद में सोये,

मै ढूँढू, तेरे सपने खोये,

तू ले जा सारा सकल मुनाफा,

नुकसान मेरा सब हो जाये,

बदनाम भले मै हो जाऊँ,

शोहरतें मेरी तू सारी रख!

छोड़ मेरी कमियों को सारी,

तू तो मेरी खूबी रख!!

अपनों में कैसी हिस्सेदारी?

और भला क्यों पहरेदारी?

नफा तुम्हारा सारा है,

क्या नुकसान में तेरी जिम्मेवारी?

चल छोड़ पुरानी बातों को,

दे झटक बही और खातों को,

बस दुःख तू अपने मुझको दे दे,

और खुशियां भी मेरी तू ही रख!

छोड़ मेरी कमियों को सारी,

तू तो मेरी खूबी रख!!

ख़िताब कोई मिलना है थोड़ी,

अभी हमे मरना है थोड़ी,

हिसाब भी हम फिर खूब करेंगे,

और बंटवारे कर खूब लड़ेंगे,

एक दिन मिलना है ही हमको,

इस जहाँ के चाहे पार मिलेंगे,

याद रखेगी मुझको फिर भी,

बस वचन मुझे तू इतना दे दे,

बाकि सब बस तू ही रख!

छोड़ मेरी कमियों को सारी

तू तो मेरी खूबी रख!!

मै रखता हूँ दोष तेरे सब

तू प्यार मेरा बखूबी रख!!

जाने क्यों ये इश्क़ मुझे बार बार होता है?

ये अलग बात है की तुमसे ही हर बार होता है,

न चाहते हुए भी ये दिल मर तुमपे ही जाता है!

सुन्दर हो तुम कौन बोला? ना सुन्दर तो नहीं हो,

पर तुम्हारे लिए ही, ये दिल बेक़रार होता है

जाने क्यों ये इश्क़ मुझे बार बार होता है?

पता है मुझे की तुम नहीं आओगी अब

पर तुम्हारा ही क्यों मुझको इन्तजार होता है

और गीले शिकवे भी बहुत हैं तुमसे लेकिन

मोहब्बत भी तो तुमसे ही बेशुमार होता है!!

जाने क्यों ये इश्क़ मुझे बार बार होता है?

तुझको जाता देख बहे थे खून मेरी इन आँखों से

नींद भी निश्चित रूठी होगी पक्का तेरी भी आँखों से

बिन तेरे ये ऑंखें रूठीं अब ख्वाब नहीं आकार लेता है

साथ तेरे बस होने से ही हर सपना साकार होता है

जाने क्यों ये इश्क़ मुझे बार बार होता है?

सच में अच्छी बहुत हो अब भी, मेरी नज़रों में भी तुम

माँ ने जैसा बोला था हाँ बचपन की सी परी हो तुम

दूर चला क्यों जाता है वो जिससे भी हाँ प्यार होता है

रोकना उसको मुश्किल, इतना क्यों सरकार होता है

और रोक नहीं पाता है दिल इतना क्यों लाचार होता है?

जाने क्यों ये इश्क़ मुझे बार बार होता है?

ये अलग बात है की तुमसे ही हर बार होता है,

जैसे करता था मै पहले

जाने क्यों वैसे ही अब भी फिक्र तुम्हारा करते हैं,

क्या बात थी तुझमे नहीं पता पर जान अभी भी वारा करते हैं!

तन्हाई में बैठ के अब भी हम जिक्र तुम्हारा करते हैं,

जाने क्यों वैसे ही अब भी फिक्र तुम्हारा करते हैं!!

छोड़ मुझे तुम चली गई?

पर याद को तेरे अब भी सवांरा करते हैं

भूली बिसरी बातों को हम, याद दुबारा करते हैं

बिन तेरे तू क्या जाने हम, कैसे गुजारा करते हैं?

जाने क्यों वैसे ही अब भी फिक्र तुम्हारा करते हैं!!

सच कहना तू कसम तुझे है,

याद मेरी क्या नही है आती?

याद किया गर होता तो हिचकी क्या फिर मुझे न आती?

पल एक अगर भी भूल गया तो खुद को ही फटकारा करते हैं

जाने क्यों वैसे ही अब भी फिक्र तुम्हारा करते हैं!!

इल्जाम मेरे ही सर आएगा, इश्क़ में चाहे दोनों जले हो,

हाथो में न हाथ भले हो,भले साथ कदम न चार चले हो,

इरादा तो चलने का था, एक दूजे में घुलने का था

कन्धों पर सर जिसका भी हो,एहसास तुम्हारा करते हैं

जाने क्यों वैसे ही अब भी फिक्र तुम्हारा करते हैं!!

जैसे करता था मै पहले.......

जाने क्यों वैसे ही अब भी फिक्र तुम्हारा करते हैं!

तन्हाई में भी बैठ के हम अब जिक्र तुम्हारा करते हैं!!

जाने क्यों वैसे ही अब भी फिक्र तुम्हारा करते हैं!

जोड़ हथेली दोनों मेरी, माँ कहती थी दुल्हन तेरी,

चाँद सी होगी, हाँ चाँद सी होगी!!

पता तुझे तो निश्चित होगा,चाँद मुझे फिर कब भाता था,

चाँद मेरा तो तू ही थी बस, सपना तेरा ही आता था,

दिखती थी तस्वीर तेरी ही, मुझको हर धड़कन में मेरी,

जोड़ हथेली दोनों मेरी, माँ कहती थी दुल्हन तेरी,

चाँद सी होगी, हाँ चाँद सी होगी!!

कैसा तुझे लगा फिर होगा,जब माँ ने खबर सुनाई होगी?

किस दिन होगा लगन तुम्हारा,पहले उससे सगाई होगी,

पढ़ कर हार गया मै सब कुछ, पत्र जो अंतिम आया था,

था कैसे फिर सुलझाया मैंने,खुद से खुद ही उलझन मेरी,

जोड़ हथेली दोनों मेरी, माँ कहती थी दुल्हन तेरी,

चाँद सी होगी, हाँ चाँद सी होगी!!

तड़प वो कैसे बयां करूँ मै, एहसास तुझे भी आया होगा,

घनघोर उजाले में भी दिन के,बादल घना ही छाया होगा,

और मेघदूत सा नाम मेरा ही उस पर फिर गहराया होगा,

मेहंदी का क्या रंग चटक था पर फीकी होगी उबटन तेरी,

जोड़ हथेली दोनों मेरी, माँ कहती थी दुल्हन तेरी,

चाँद सी होगी, हाँ चाँद सी होगी!!

शादी के फेरों में तुझको लगा नहीं क्या मै पीछे था?

गर एक कलाई तेरी थी और दूजा मेरा ही नीचे था,

फिर उनसे ब्याह हुआ था कैसे,जब थी वो मनबंधन मेरी,

जोड़ हथेली दोनों मेरी, माँ कहती थी दुल्हन तेरी,

चाँद सी होगी, हाँ चाँद सी होगी!!

तन्हाई में मुझको जाने वो चेहरा क्यों याद आता है,

भूल गया था मै तो उसको फिर भी बड़ा सताता है!

छोड़ गया था वो तो मुझको,सालों पहले फिर भी क्यों,

कभी सुबह तो शाम कभी, भरी दोपहरी भी आता है!!

तन्हाई में मुझको जाने वो चेहरा क्यों याद आता है!!!

जब चला गया था छोड़ के फिर,जाने कैसे समझाया था,

दिल तो है नादान मेरा पर, फिर भी मैंने बहलाया था!

रहना था तो रह जाती या जाना था तो चली ही जाती,

जाकर भी मुझमे ही रहना, ये रीत कहाँ अब भाता है!!

तन्हाई में मुझको जाने वो चेहरा क्यों याद आता है!!!

प्यार में तेरे डूब गया था, पर तूने मुझे निकाला कब?

गर इश्क़ में तेरे पागल था तो तूने मुझे संभाला कब?

बिखर गया था मै भी तो,जब छोड़ मुझे तू चली गयी,

जाना तेरा ठीक नहीं था,भला ऐसे कोई कहाँ जाता है!!

तन्हाई में मुझको जाने वो चेहरा क्यों याद आता है!!!

अब तो तू ही तय करती है,कब और कितनी बात करेगी?

मिलेगी सपनो में मुझसे या सच में ही मुलाकात करेगी?

नंबर तो दे दिया था अपना पर फ़ोन भी करने मना किया था!

पर बात न करने की शर्तों पे नंबर कोई कहाँ देता है,

तन्हाई में मुझको जाने वो चेहरा क्यों याद आता है!!

तन्हाई में मुझको जाने वो चेहरा क्यों याद आता है!!!

तेरे बाद न जाने क्यों, और कोई फिर कभी न भाया,

ना जाने क्यों चेहरा कोई, बाद तेरे फिर पसंद न आया!

खूब दिलासा दिया था दिल को,तू तो साथ नहीं थी मेरे,

हर साँस से तुझको जुदा किया पर राहत दिल को चंद न आया!!

तेरे बाद न जाने क्यों, और कोई फिर कभी न भाया!!!

कोशिश भी मैंने लाख किया था, सोचा राहत हो जायेगा,

तुझे भुलाने का सोचा शायद,सफल वो चाहत हो जायेगा!

तड़प, उदासी, सूनेपन की अब तुझसे, क्या बात करूँ मैं,

हमने जो मिलके साज थी छेड़ी उसमे भी कोई छंद न आया!!

तेरे बाद न जाने क्यों, और कोई फिर कभी न भाया!!!

तेरा जाना, जाने क्यों तकलीफ अभी भी देता है,

आँखों की क्या बात करूँ मैं,दिल भी दामन धोता है!

तड़प रहा हूँ इश्क़ में तेरे,कहना गर महसूस तुझे हो,

तुम्हे भूलाने का देखो ये,हर प्रयास विफल कर देता है,

प्यार में तेरे इसके जैसा, दिल मैंने पाबंद न पाया!!

तेरे बाद न जाने क्यों,और कोई फिर कभी न भाया!!!

रिश्ता तोड़ दिया था तूने पर, मैं तो चलता रहा निभाता,

बिन तेरे इस दिल को मेरे और कोई फिर कहाँ था भाता?

हसीन जो शामें हो जाती थी, केवल तेरे होने भर से,

था इंतजार मे पागल जिसके,शाम भी अब वो नही सुहाता?

मिलन में तुझसे जो आता था वैसा फिर आनंद न आया!!

तेरे बाद न जाने क्यों,और कोई फिर कभी न भाया!!!

तेरे हर मसले का हिसाब लिख रहा हूँ मै,

तूने जो पूछे थे सवाल,जबाब लिख रहा हूँ मै!

माना तुझे सिर्फ खामिया ही दिखीं थीं मुझमे

पर तेरी खूबियों पे तो किताब लिख रहा हूँ मै!!

पढ़ना उसको जरूर जो हाथ लगे तेरे,

जिक्र उसमे हर लम्हे का मिलेगा मेरे,

तू कैसे याद नहीं अब करती मुझको,

तेरी तो सांसों में भी शरीक रहा हूँ मै!

पर तेरी खूबियों पे तो किताब लिख रहा हूँ मै!!

गर याद आ जाये कभी तो बात कर लेना,

प्यार तो अब भी बहुत है समात कर लेना!

कर सके तो कर देना,बेशक दिल से बेदखल मुझको,

अरे, तेरे तो रग रग को शफ़ीक़ रहा हूँ मै!!

पर तेरी खूबियों पे तो किताब लिख रहा हूँ मै!!

बुला लेना मुझे जब जी करे तेरा,

पुकारना नहीं पड़ेगा तुझे वादा है ये मेरा!

लेकिन तोहमत न देना बेवफाई का मुझको,

क्यों की दर पर तेरे तो सदियों से चीख रहा हूँ मै

पर तेरी खूबियों पे तो किताब लिख रहा हूँ मै!!

तेरा शहर भी छोड़ दिया मैंने

तन्हाइयों से रिश्ता भी जोड़ लिया मैंने

कैसे मुस्कुरा लेती है तू अब भी छोड़कर मुझको

तेरी तरह ही जीने की कला सीख रहा हूँ मै

पर तेरी खूबियों पे तो किताब लिख रहा हूँ मै!!

शफ़ीक़ - प्रिय, शरीक - शामिल, समात - सुनना

थी चाँद की ख्वाहिश तो कहा क्यों नहीं,

उतार देता मै आंगन में उसे तू बोलती तो सही!

ऐसी तो नहीं थी तू की अदने से चाँद की खातिर,

निकाल के फेंक दे मूझे तू जिंदगी से कहीं!!

उतार देता मै आंगन में उसे तू बोलती तो सही!

मन अगर कर ही गया था, कहके तो देखती,

इल्जाम ये खुद पे तुझे पड़ती,लेने की जरुरत ही नहीं!!

और क्यों कहा था तूने की लौट आउंगी मै जल्दी,

वरना एक पल को भी साथ तेरा मै छोड़ता ही नहीं

उतार देता मै आंगन में उसे तू बोलती तो सही!

कैसे दिलासा दूँ कैसे समझाऊं मै धड़कनो को अपने,

बेचैन हैं ये सवाल नहीं करती,जुबाँ जो नहीं है इनका,

सासें भी तेज हो चली हैं, हरकतें भी चीखतीं बहुत हैं

घबराता बहुत हूँ मै अब भी,सच में पहले ही की तरह,

अब तू मूझे गले लगाकर संभालती क्यों नहीं?

उतार देता मै आंगन में उसे तू बोलती तो सही!

ठीक है थोड़ा कमतर हूँ मै उससे,

थोड़ा कम पढ़ा-लिखा,थोड़ा बदत्तर हूँ मै उससे,

बता जैसे करती थी तू मुझसे,

क्या कर पाती है उससे भी, मुझ सा ही हाँ प्यार वही

उसमे हाँ उसमे ही क्या सच में कोई कमी ही नहीं?

उतार देता मै आंगन में उसे तू बोलती तो सही!

थोड़ा लगा की किस्मत में हो,और बाकि की हाथ लकीरों में,

थोड़ी लगी तुम ख्वाहिश में हो,हो मुक्कमल दुआ फकीरों में!

पर मंजिल ही तो एक नहीं थी, ये मिलन हमारा होता कैसे?

कभी सुना है ऐसा मेल अजब! क्या नदी के दोनों तीरो में।।

कभी सुना है ऐसा मेल अजब! क्या नदी के दोनों तीरो में।।

कुछ तो मन्नत तूने मांगी, की दर दर पे इबादत मैंने भी,

कुछ ख्वाब तो तूने भी देखे,कुछ बुना था हसरत मैंने भी!

नाहक वो सभी बेकार हुईं, क्या किया धरा सब पानी था?

नसीब ने साथ लिखा था बस,कॉलेज की पुरानी तस्वीरों में,

कभी सुना है ऐसा मेल अजब! क्या नदी के दोनों तीरो में।।

कहती गर इक बार जो मुझसे,दीवारें सारी गिरा देता,

दरमियां खींची लकीरों को, इशारे पर एक मिटा देता!

ख्वाहिश थी कि साथ तेरे,बस धाराओ संग बहना था,

पर दोष कहां था तेरा भी,जब साथ नही था तकदीरों में!!

कभी सुना है ऐसा मेल अजब! क्या नदी के दोनों तीरो में।।

दो तीर भले हों एक नदी के,मिलना मगर जरूरी था

लाख ज़माना दुश्मन हो पर, लड़ना बहुत जरूरी था

आसान नही था राह मेरा पर,चोट तुझे न खाने देता,

घावों को तुझ तक पहले कभी नही मै आने देता!

सागर मगर मिला देता है दो तीरों को तदबीरों मे!!

कभी सुना है ऐसा मेल अजब! क्या नदी के दोनों तीरो में।।

दरमियाँ कितनी भी दूरी रही हो,

हरपल मेरे लिए तुम जरूरी रही हो!

मेरे दिल में है अब भी,अंदेशा ये काबिज,

छोड़ना मुझे शायद, मजबूरी रही हो!!

दरमियाँ कितनी भी दूरी रही हो!

निकाला तूने गर दिल से मुझे जो,

पर दिल से मेरे तुम जुदा कब रही हो?

कितनी न जाने शामे गुजारीं मेरे अंक आकर!

तुम्हे कैसे लगा दूर मुझ से यूँ जाकर,

इसमे ही शायद, समझदारी रही हो!!

दरमियाँ कितनी भी दूरी रही हो!

जान था तब तो मै भी तुम्हारा?

हर कसम में भी, तुम मेरी रही हो,

देखो!! मिलना मिलाना तो है मर्जी खुदा की!

बिछड़ने की अबकी संभव है,बारी हमारी रही हो!!

दरमियाँ कितनी भी दूरी रही हो!

मोहब्बत में क्या कर हमने ये डाला?

तड़पती रही तू, मैने भी जीवन ये कोरा निकाला!

और समझाया तो तूने मुझे भी यही था,

है मुमकिन यही दुनियादारी रही हो!!

दरमियाँ कितनी भी दूरी रही हो!

दामन कोरा ही अच्छा था, फिर ये रंग भरे क्यों तूने?

जब करने ना थे साथ में पुरे,सपने फिर ये बुने क्यों तूने?

माँगा तो बस साथ तेरा था,फिर हिज्र मेरे क्यों हिस्से आई,

काट भी लेता याद में तेरे

भूल तुझे ही जाने की फिर,मुझको कसम दिया क्यों तूने?

दामन कोरा ही अच्छा था, फिर ये रंग भरे क्यों तूने?

कसम तो हमने साथ लिया था, क्या भूल मुझे तू पाई है?

निभाना गर मेरा ही जिम्मा है?फिर तूने झूठी कसम वो खाई है?

याद मुझे करने दे तुझको, या तू भी मुझको करना छोड़ दे!

तू छोड़, मुझे आज़ाद कर दे,या सौगंधों को वरना तोड़ दे!

थी साथ की जब वो शपथ हमारी,छोड़ मुझे फिर दिया क्यों तूने?

दामन कोरा ही अच्छा था, फिर ये रंग भरे क्यों तूने?

जुदा हो गए राह हमारे तुझसे शायद अब मै मिल ना पाऊँ,

मोड़ जहाँ पे मिलना तय था मै वहां भी शायद जा ना पाऊँ,

खुल चुकी हैं गांठें सारी जो हमने मिल के बाँधी थी,

साथ जियेंगे साथ मरेंगे कसम जो हमने साधी थी,

तुझे तो कहता अपना था,फिर तोड़ भरम वो दिया क्यों तूने?

दामन कोरा ही अच्छा था, फिर ये रंग भरे क्यों तूने?

तुम तो केवल तुम ही ना थी मै भी तो था थोड़ा सा तुममें

टुकड़ो में मै जी रहा हूँ,और ढूँढ रहा हूँ खुद को ही खुद में?

अपने हिस्से का लेना था,तय हाल मेरा भी कर दिया क्यों तूने?

दामन कोरा ही अच्छा था, फिर ये रंग भरे क्यों तूने?

दामन कोरा ही अच्छा था, फिर ये रंग भरे क्यों तूने?

देखो न खोया था खुद में ही की याद तेरी काम लेके आ गई!!

अभी तो सुबह थी फिर अचानक कैसे वो शाम लेके आ गई?

जब से गई हो पता ही नहीं चलता, दिन या की फिर रातों का,

जिंदगी जिया ही कहा था अभी,की मौत पैगाम लेके आ गई!!

देखो न खोया था खुद में ही की याद तेरी काम लेके आ गई!!

जितना सोचा था असल में उतनी हसीन नहीं है ये जिंदगी,

बिन तेरे कमी तो कोई नहीं,हाँ सच कोई कमी नहीं लेकिन!

उदासियाँ बहुत हैं इसमें,इतनी भी रंगीन नहीं है ये जिंदगी,

पौं फटा ही था अभी की तन्हाईयाँ तेरा नाम ले के आ गई!

देखो न खोया था खुद में ही की याद तेरी काम लेके आ गई!!

याद नहीं क्या आता तुझको कॉलेज का वो दिन पहला था,

उतरते उस दिन बस से पहले, मै ही तो हाँ तुझे मिला था!

साथ में कैसे पढ़ते लड़ते काट दिया था चारों साल,

याद की तेरे दलदल से अब निकल नहीं मै पाउँगा,

जाने क्यों लगता है तूझको भूल नहीं मै पाउँगा!

तुम्हारे साथ बिताई शामें, कसने लगाम ले के आ गईं!!

देखो न खोया था खुद में ही की याद तेरी काम लेके आ गई!!

पलकें उस दिन भीगीं क्यों जब फिर आने क वादा था

समझ न तू ये पाई कैसे कसम वो सीधा सादा था

ऐसा क्या था उस दिन में क्यों हाथ मेरा यूं छोड़ गई

जीने की तो बात जुदा जब मरने का साथ इरादा था

पलकें उस दिन भीगीं क्यों जब फिर आने क वादा था

कहती थी तुम सोचो मुझको ख्वाब में तेरे आ जाउंगी

उससे ज्यादा सोचे गर फिर सपनो में आ जाउंगी

कहना तेरा सच था या वो भी एक मजाक ही था

याद में तेरे डूब गया तय कर तू ये कम या फिर ज्यादा था

पलकें उस दिन भीगीं क्यों जब फिर आने क वादा था

आता गर उस दिन तो क्या मुझसे नजर मिला पाती

मुझसे मिलकर उसदिन क्या तू साजन के संग जा पाती

कहती क्यों थी आजा फिर मै साथ तेरे घर जाउंगी

क्या जानू मै उसी शहर में उस दिन कैसे जिन्दा था

पलकें उस दिन भीगीं क्यों जब फिर आने क वादा था

किया ये तूने कैसे था हिस्सों में दिल को बाँट दिया

या गैर के खातिर तूने ही हाँ मुझीको मुझसे काट दिया

सोच रहा हूँ कैसे तूने फिर सखियों को समझाया होगा

देख वो तुमसे पूछी होंगी जब ओढ़ा गैर लबादा था

पलकें उस दिन भीगीं क्यों जब फिर आने क वादा था

पिछली बार मिली थी जब वो,

जाने क्यों वो तड़प रही थी?

थी होंठ पे उसकी गहरी चुप्पी,

पर आंखें उसकी बरस रही थी!!

थी होंठ पे उसकी गहरी चुप्पी,

पर आंखें उसकी बरस रही थी!!

भीग रहा था मै भी उसमे

खड़ी दूर मुझे ही देख रही थी

जिस प्यार पे केवल उसका हक़ था

हाँ उसी को अब भी तरस रही थी

थी होंठ पे उसकी गहरी चुप्पी,

पर आंखें उसकी बरस रही थी!!

दुख था जाने कौन सा उसको

पर कहने में मुझसे लरज रही थी

चढ़ा एक मेरा ही रंग था उसपे,

वो उसे ही सातों समझ रही थी,

थी होंठ पे उसकी गहरी चुप्पी,

पर आंखें उसकी बरस रही थी!!

एक लकीर लाचारी की थी,

जो चेहरे से बखूबी झलक रही थी

जुबां से कुछ भी कहा नही पर

धड़कने ही उसकी गरज रही थी

थी होंठ पे उसकी गहरी चुप्पी,

पर आंखें उसकी बरस रही थी!!

बात तो उससे हुई नही पर,

हुई मुक्कमल बात हमारी...

दिल ने केवल दिल से की थी,

कुछ भी कहना शेष न था,

आंखों ने आंखो से कह दी

कुछ बचा हुआ अवशेष न था

गुफ़्तगू तो किया था दिल ने

हाँ वो भी उसको समझ रही थी,

थी होंठ पे उसकी गहरी चुप्पी,

पर आंखें उसकी बरस रही थी!!

फीकी थी मेरी शामें भी,

और सुबह भी सुनी-सुनी हैं!

चोट तो बाहर थोड़ा है,

पर जख्म बड़ा अंदरूनी है!!

लिखा था तूने मुझको शायद,

खलल न करना तुम जीवन में,

पत्र जो पढता हूँ अंतिम मै,

अब भी रोना आता है,

जहर से लगते जाने क्यों,

अल्फाज तेरे सब खूनी हैं!

चोट तो बाहर थोड़ा है,

पर जख्म बड़ा अंदरूनी है!!

रहती तो है दिल में अब भी,

पर मिलन हमारा कब होता है,

घाव जो गहरा दिल पर है,

मरहम भी उसपे कब लगता है,

प्यार में मेरे खोट कहाँ था,

ये इश्क़ मेरा रूहानी है!

चोट तो बाहर थोड़ा है,

पर जख्म बड़ा अंदरूनी है!!

बोलो ना भूलकर मुझे खुद को संभाल पाओगी कैसे

सपनो का जिसे तुम राजकुमार कहती थी

उसे ख्वाबों से जुदा कर पाओगी कैसे

तन मन पे जो छाया रहता हूँ मै हरदम

बातें कर जिससे तुमने भुलाया है हर ग़म

हाँ भूलकर उसको ही तुम चली जाओगी कैसे

बोलो ना भूलकर मुझे खुद को संभाल पाओगी कैसे

वो बहुत अच्छे हैं माँ पापा घरबार, हैं सब बेकार की बातें

सुनो ना मै नहीं करूँगा अब वो काम कोई, तुम्हे जो पसंद नहीं आते

कहो ना एक बार कहो ना की नहीं जाओगी तुम कहीं किसी के साथ

और हाँ मर तो मै भी जाऊंगा देख तुझे जाते गैर के साथ

हरकतों की जो आदत है उससे छुटकारा तुम पाओगी कैसे

बोलो ना भूलकर मुझे खुद को संभाल पाओगी कैसे

कैसे भूल जाओगी मुझको, क्या याद नहीं अब मै आऊंगा

वादा तो चलना साथ का था फिर अकेले कैसे जा पाउँगा

बिन मेरे क्या पूरा होगा तेरे सफर ये लम्बे सांसों का

चलो याद करना गर छोड़ भी दो

तो भी याद आना मेरा रोक पाओगी कैसे

बोलो ना भूलकर मुझे खुद को संभाल पाओगी कैसे

मुझे पता है बिछड़ के मुझसे तुम रह नहीं पाओगी

जीना किस कदर मुश्किल होगा वहां तेरा

मै जनता हूँ तुमको तुम जिद्दी हो बहुत पर

जीने की जिद्द में यकीन मानो तुम मर जाओगी

तुम सांसों को अपने आसान मत समझो वो आती हैं

क्यूंकि मै टहलता हूँ तेरी रगों में सांसे बनकर

तुम सांसों को अपने रोक भला पाओगी कैसे

बोलो ना भूलकर मुझे खुद को संभाल पाओगी कैसे

मिलना तो निश्चित है अपना,

मिलेंगे और हर बार मिलेंगे!

नहीं हुआ गर इस जीवन में,

फिर जीवन के उस पार मिलेंगे!

ना धरती ने साथ दिया फिर,

चाँद पर ही इस बार मिलेंगे!!

मिलना तो निश्चित है अपना,

मिलेंगे और हर बार मिलेंगे!!!

तू व्यर्थ की चिंता क्यों करती हैं,

बेकार तूफान से क्यों डरती है!

छोड़ न बाधा आने दे,

उसको भी मुश्किल ढाने दे!

हम शर्म उसे भी सार करेंगे,

तूफानी दरिया पार करेंगे!

मिलना तो निश्चित है अपना,

मिलेंगे और हर बार मिलेंगे!!!

दर्द हो चाहे जितना शातिर,

हम बिछड़े ही हैं मिलने खातिर,

तू देख कभी निराश न होना,

और कभी फिर आस न खोना,

यहाँ मर-मर जीना पड़ता ही है,

हर शख्श यहाँ पर लड़ता ही है!

जब सब लड़ते हैं हम भी लड़ेंगे,

कोशिश भी हम खूब करेंगे!

इस बार अगर न हो पाया,

तो पक्का अगली बार मिलेंगे!

मिलना तो निश्चित है अपना!

मिलेंगे और हर बार मिलेंगे!!

बिन मेरे कितना भुगता होगा,

हाँ दिल तेरा भी दुखता होगा!

साँस मेरा भी चुकने को है,

आ जा फिर से मिल लेते हैं,

ये कमी, भी पूरी कर लेते हैं!

राह भले हो मुश्किल कितना,

मिलकर हम आसान करेंगे,

मिलना तो निश्चित है अपना,

मिलेंगे और हर बार मिलेंगे!!!

नहीं हुआ गर इस जीवन में,

फिर जीवन के उस पार मिलेंगे!

मिलो तो तुमसे बात करेंगे, वो भी सारी रात करेंगे,

मिलकर तुमसे बतियाएंगे, और शरारत साथ करेंगे

ख्वाब में तेरा आ जाना और ख़ुश्बू सा फैला जाना

दिन वही फिर लौट आये दोनों ये फरियाद करेंगे

मिलो तो तुमसे बात करेंगे, वो भी सारी रात करेंगे,

याद है तेरे हॉस्टल आना काका से तुझको बुलवाना

नखरे उसके इतने थे ऊपर से तुझको समझाना

और किनारे बैठ के कैसे नदी में कंकर फेका करते थे

आजा फिर से वहीँ चलेंगे और शिकायत साथ करेंगे

मिलो तो तुमसे बात करेंगे, वो भी सारी रात करेंगे,

है इल्म तुझे ना भाता होगा बिन मेरे रोना आता होगा

जुगनू की पहुँच तो होगी वहां और चाँद नजर भी आता होगा

चाँद मै तुमको कहता था और तारों में मुझे तू पा लेना

वहीँ से तू भी बातें करना हम भी यहीं से सुना करेंगे

मिलो तो तुमसे बात करेंगे, वो भी सारी रात करेंगे,

चलो न फिर से वहीँ चलेंगे, चट्टानों पे फिर से चढ़ेंगे

पिछलीबार लिखा था जैसे नाम वहीँ पर फिर से लिखेंगे

दुखी रहे तो मुझसे कहना देखो फिर तुम कभी न रोना

कंटक हो गर राह में तेरे मिलकर हम आबाद करेंगे

मिलो तो तुमसे बात करेंगे, वो भी सारी रात करेंगे,

मिलो तो तुमसे बात करेंगे, वो भी सारी रात करेंगे,

मेरा भ्रमर सा तड़पना याद तो होगा

और कुमुदुनी सा तेरा कुम्हलाना याद तो होगा

तड़पाती होगी वो मेरी पहली छुवन तुझको

तेरा मुझसे रूठना और फिर मनाना याद तो होगा

जब तुझे आगोश में लेगा कोई अपनी

तब तुझे मेरी कमी का बोध तो होगा

वो राधा सी तड़प होगी वो गोपियों सा क्रोध होगा

नींद में जब तू पुकारेगी अपने प्रियतम को कभी

उस उच्चारण में भी मेरा नाम ही उच्चारित होगा

बिजलियों के कौंधने पे डरकर चिपकना

और फिर दूर हटकर बदमाश कहना याद तो होगा

अकेले में मेरी आवाज सुनकर चौकना

मेरा चेहरा उभरना

मुझको पागलों सा ढूँढना

और खुद को मेले में तन्हा समझना याद तो होगा

मेरा भ्रमर सा तड़पना याद तो होगा

और कुमुदुनी सा तेरा कुम्हलाना याद तो होगा

मेरा हंसकर महफ़िल में ये कहना की अच्छा हूँ बहुत,

फिर मुझसे पूछना तेरा की दुखी क्यों हो इतने,

मेरे दर्द को यूँ समझकर नक़्शे की तरह कागज पर उकेरने,

की कला में जो माहिर है,एक माँ थी और एक तू है,

चेहरे पर शिकन, माथे का पसीना और थकन,

मुझमे छटपटाते वो एक बच्चे का लड़कपन,

मेरी गंभीरता के पीछे की उदासी को महसूस करने

वालों में जो जाहिर है एक माँ थी और एक तू है,

मेरा असहनीय दर्द कब और कहाँ दिखतें हैं किसी को,

रिवायत भी तो यही है की अपने ही जख्म दिखतें हैं सभी को,

पर अपने भूल मेरे घाव पर मरहम लगाने के लिए

हरदम जो हाजिर है एक माँ थी और एक तू है!

जो बोलता हूँ मै वो, सुन तो सभी लेते हैं आसानी से,

पर गरज तो थी जो चुप्पी को भी समझे सावधानी से,

कुछ पसंद न आने पे यूँ चुप रह जाना मेरा,

बातें बनाकर वहां से हट जाना मेरा,

मेरे जख्मी दिल को भी हरपल सहलाने

को जो तत्पर है एक माँ थी और एक तू है !!

हाँ एक माँ थी और एक तू है,

सच में एक माँ थी और एक तू है

दोनों जुदा हो गए मुझसे

माँ तो चली गई दुनिया छोड़ के और तू मुझे!

माँ तो चली गई दुनिया छोड़ के और तू मुझे!

याद है?

क्या बोलकर छोड़ा था मुझे बताओ तो?

जैसे सताया करती थी तू मुझको,

एक बार उनको भी कभी,वैसे ही सताओ तो!

क्या बोलकर छोड़ा था मुझे बताओ तो?

हमारे मुकाबले में है कहाँ कोई?

जगा के देख सारी, जो हसरतें हैं सोई,

जैसे करती थी तू मुझसे,

प्यार उनसे भी वैसे ही एक बार जताओ तो!

क्या बोलकर छोड़ा था मुझे बताओ तो?

मेरे खुशामद की ख्वाहिश में रूठना तेरा,

और फिर तुझे घंटों मनाना मेरा,

उनसे भी कभी वैसे ही रूठ जाओ तो

और मेरे साइकिल पे बैठ जाया करती थी तू जैसे,

चिपक के उनकी कार में सही बैठ जाओ तो,

क्या बोलकर छोड़ा था मुझे बताओ तो?

मेरी बातें सच में अब याद नहीं आती तुझको?

या भूल जाने की बेहद कोशिश में है तू मुझको?

भूल जाने की बेशक कोशिशे बेइन्तेहाँ करो,

सपने में ही सही कभी भूल के दीखाओ तो,

क्या बोलकर छोड़ा था मुझे बताओ तो?

सुनो न ऐसा अब करते हैं

भूल जाना तो मुश्किल है पर

याद जरा अब काम करते हैं

कौन है किसकी किस्मत में

सब विश्व विधाता तय करते हैं

सुनो न ऐसा अब करते हैं

छोड़ो उसका शोक मनाना

जो नहीं था अपना उसे क्या पाना

पा जाने में दूख क्या ऐसा,

जो ना पाने में करते हैं

सुनो न ऐसा अब करते हैं

सुनो ना थोड़ा खुश रहा करो ना

हम तकलीफों में क्यों रहते हैं

जो हुआ वो तुमसे ठीक नहीं था

पर मजबूरी में सब करते हैं

मुझको कोई गिला नहीं अब

शिकवे भला हम कब करते हैं

सुनो न ऐसा अब करते हैं

आँखों से ये नमी हटाओ

कौनहै किसका भूल ये जाओ

पर थोड़ा तो हूँ मै तुममे

और थोड़े तुम भी हो मुझमे

जश्न इसी का हम करते हैं

सुनो न ऐसा अब करते हैं

सुनो न ऐसा अब करते हैं

सुनो न शादी कब है तुम्हारी?

बताना जरूर …………..  हम आएंगे!

चिंता मत करना तुम मेरी, हम भी संभल ही जायेंगे,

पर फिर कभी किसी से मोहब्बत का इजहार नहीं करेंगे!!

और टूट कर किसी से इस तरह हम प्यार नहीं करेंगे!!

जाग के सारी रात मै फेरे सातों देखूंगा,

कसम की तेरे गाढ़ेपन को अपनी आँखों देखूंगा,

कसम क्या तुझपे असर है करती? कहना फिर से

हाँ फिर से कहना हम इसको फिर एक बार सुनेंगे

अंतिम फेरों के बाद में तेरा इंतज़ार नहीं करेंगे

और टूट कर किसी से इस तरह हम प्यार नहीं करेंगे!

आना तो मै द्धार तेरे बांध कर सेहरा चाहता था,

खिला हुआ सा मुस्काता तेरा चेहरा चाहता था!

मंजूर नहीं था रब को शायद, उसने भी कुछ सोचा होगा

अब कभी भी जिंदगी अपनी यूँ गुलजार नहीं करेंगे

और टूट कर किसी से इस तरह हम प्यार नहीं करेंगे!

भुलाने की कोशिश तुझे मै अब शिद्दत से करूँगा

मुश्किल बहुत है पर हाथ रख के मै दिल पे करूँगा

कर डालेंगे वो सब भी जो दिलोजान गवारा नहीं करेंगे

अब भूलकर भी किसी से यूँ इश्क़ दुबारा नहीं करेंगे

और टूट कर किसी से इस तरह हम प्यार नहीं करेंगे!

सुनो न!! अब किसी से तुम कभी भी प्यार मत करना,

है मशविरा मेरा कोई दिलदार मत करना!

प्यार गर कर भी लिया तो भी ठीक है लेकिन

है सलाह ये मेरा किसी का इन्तजार मत करना!

सुनो न!! अब किसी से तुम कभी भी प्यार मत करना,

है मशविरा मेरा कोई दिलदार मत करना!

जरुरत क्या है, करना कोई मजबूरी तो नहीं?

फिर मुझसा ही मिले कोई,ये जरुरी तो नहीं?

मिल भी गया गर कोई,तो आँखें चार मत करना,

कुछ नहीं होगा उसे,पर खुद को तुम बीमार मत करना!

सुनो न!! अब किसी से तुम कभी भी प्यार मत करना,

है मशविरा मेरा कोई दिलदार मत करना!

दौर मुश्किल है बड़ा और,

तुम खूब नाजुक इक कलि हो,

छूने से कुम्हला जाये इक फूल तुम भी मखमली हो,

तुम चाँद की हो चांदनी और शीतल श्यामली हो,

नदियों की सी अनगढ़ी मदमस्त धारा मनचली हो,

पर खींचीं है जो मैंने इर्द - गिर्द में तेरे,

है मशविरा तुमको,लकीरें भी कभी तुम पार मत करना!

सुनो न!! अब किसी से तुम कभी भी प्यार मत करना,

है मशविरा मेरा कोई दिलदार मत करना!!

आएगी मिलने मुझे, अब भी यकीन है शायद,

भले वो दिन आये जाने के मेरे बाद ही शायद!

हाँ कोई गिला नहीं,और शिकवा भी नहीं कोई,

जो ख्वाहिश थी,नसीबों में नहीं था चाँद वो शायद!!

उम्मीदें जब तलक हैं तुम भी किसी से बात मत करना,

और खबर मिलने से पहले तुम कोई भी यार मत करना!

सुनो न!! अब किसी से तुम कभी भी प्यार मत करना,

है मशविरा मेरा कोई दिलदार मत करना!!

हार नहीं वो मेरी थी, और न तू ही हारी है,

वक़्त का पहिया घुमा है, इस बार हमारी बारी है!

न रोक मुझे तू जाने दे,हाँ लौट के मै फिर आऊंगा

जंग छिड़ी जो किस्मत से थी, देख अभी तक जारी है!

वक़्त का पहिया घुमा है, इस बार हमारी बारी है!

ये तड़प तुझे क्या भाता है, बिन मेरे जीना आता है?

कोयल की कुहुक तू सुनती है,क्या चाँद अभी भी गाता है

याद नहीं क्या करती मुझको,क्या भूल मुझे तू सकती है?

ऐसे भी क्या जीवन जीना, मौत से भी जो भारी है!!

वक़्त का पहिया घुमा है, इस बार हमारी बारी है!

सपनो को न मरने देना, बुना जो हमने साथ में था

और इरादा पक्का रखना,गुना जो हमने साथ में था

मात नहीं इस बार मिलेगी, कसम तुम्हारी है मुझको,

दुश्मन हों गर लाख भले, तय उनकी हार करारी है

वक़्त का पहिया घुमा है, इस बार हमारी बारी है!

दुखता है दिल मेरा सच मे, याद तेरी जब आती है,

बिन तेरे जाने क्यों इक हूक सी दिल मे उठ जाती है!

पार हमे ही करना होगा जो बीच हमारे खाई है

क्या कसम हमारी झूठी थी,जो हमने खाई सारी है,

वक़्त का पहिया घुमा है, इस बार हमारी बारी है!

हो संभव अगर तो मिलो ना,

बातें कुछ आज बोलनी है मुझे!

करता हूँ मैं खुद से वो बातें जो अक्सर,

कुछ राज हैं सीने में बैठा हूँ दफ़नकर,

मिलकर तुमसे वो राज खोलनी है मुझे!

हो संभव अगर तो मिलो ना,

बातें कुछ आज बोलनी है मुझे!

मिलो न सच में मिलो न मुझे,

नखरे तो झेले हैं तूने भी बहुत मेरे

पर तेरी तो अब नाज झेलनी है मुझे!

प्यार है,मोहब्बत है या है जाने कुछ और,

अंजाम इसका बेचैनी ही है या है कोई ठौर!

साथ तेरे एक नयी सी साज छेड़नी है मुझे,

रिश्तों में जो बंध गई है गांठ खोलनी है मुझे!

हो संभव अगर तो मिलो ना,

बातें कुछ आज बोलनी है मुझे!

फायदे बटोरूँ मोहब्बत के या की फिर नुकसान देखूं ,

समंदर को समेटूं बाँहों में या नदियों के उफान देखूं!

तू कहती थी न की दर्द बहूत है इश्क़ में,

तो मजा लूँ मैं इश्क़ का या फिर दर्द का तूफान देखूं !

बता न क्या बंदिशें हैं, बताती क्यों नहीं मुझको ,

भार है जो दिल में तेरे उनमे साद घोलनी है मुझे!

हो संभव अगर तो मिलो ना,

बातें कुछ आज बोलनी है मुझे!

वादा तो दोनों का था उसे ही निभाने आ जा,

या तन्हाइयों को मिटाने के बहाने आ जा!

अगर ना रही मोहब्बत तो ना सही लेकिन,

दिलों में बसाई थी जो दुनिया,

ख्वाबों में ही सही उसको ही मिटाने आ जा!!

वो बातें जो दबी हुई है होठों में तेरे,

हलक से तेरे वो बात निकालनी है मुझे!

हो संभव अगर तो मिलो ना,

बातें कुछ आज बोलनी है मुझे!